International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2016; Page No. 423-423

भारत में 19वीं शत्ताब्दी में हुये सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलनों का प्रभाव

Rajnish Kumar Singh
Department of History, SS Sinha College, Aurangabad, Bihar, India

प्रस्तावना

19वीं सदी में जबर्दस्त बौद्धिक व सांस्कृतिक उथल पुथल भारत की एक विशेषता थी। इस काल में हुये धार्मिक और सामाजिक सुधार आन्दोलन का भारत के इतिहास में विशेष स्थान है।

धर्म सुधार आन्दोलनों में भारतीयों को आधुनिक विश्व से तालमेल बिठाने योग्य बनाया। वास्तव में इन आदोलनों का उदय ही पुराने धर्मों को नवीन आधुनिक सांचे में ढ़ालकर उनको समाज के नए वर्गों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनने के लिए हुआ था। शुद्ध रूप से धार्मिक विचारों के अतिरिक्त धर्मसुधार आंदोलनों ने भारतीयों के आत्मविश्वास, आत्मसम्मान तथा देश पर गर्व करने की भावना को बढ़ाया। दूसरे इन आंदोलनों ने बाकी दुनिया से भारत के सांस्कृतिक और बौद्धिक अलगाव को भी कुछ हद तक समाप्त किया तथा विश्वव्यापी विचारों में भारतीयों को भागीदार बनाया परंतु आधुनिकीकरण नहीं किया गया।

इसके अलावा इस आंदोलनों से स्त्री मुक्ति आंदोलनों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। सतीप्रथा, विधवा–विवाह को वैध बनाना, लड़कियों के विवाह की आयु सीमा को बढ़ाना आदि महत्वपूर्ण प्रयास किए गये। इसके साथ ही साथ धर्मग्रंन्थों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ। फलस्वरूप धार्मिक ज्ञान पर पुजारियों एवं धर्माचार्यो का चला आ रहा एकाधिकार समाप्त हो गया। परिणाम स्वरूप धर्मग्रंथों की गलत व्याख्या के द्वारा पुजारियों द्वारा जो पखंड चलाया जा रहा था वह भी समाप्त हुआ।

19वीं सदी में शुरू हुए वे सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन 20वीं सदी की तीसरे दशक में अपनी विशिष्ट पहचान खोने लगे। इसका कारण थाकि इस सुधार आंदोलनों के तहत जो मांगे उठायी जाती थी अब वे राजनीतिक आंदोलन के एक मुख्य भाग के रूप में सामने आई। गांधी के आगमन के पश्चात इन सामाजिक सुधारों को राजनीतिक संघर्ष के अन्तर्गत स्थान दिया जाने लगा। गांधी ने अपने राजनीतिक आंदोलनों में रचनात्मक कार्यों पर भी बल दिया जैसे हरिजन उत्थान, छुआछूत विरोधी गतिविधियां, महिलाओं का सम्मान, मानवतावाद आदि थे। रचनात्मक कार्य समाज सुधार की ही कोटि में आते थे। नेहरू और अम्बेडकर के विचारों में भी राजनीतिक पहलुओं के अतिरिक्त समाजिक सुधार पहलू भी नीहित थे। इसकी संकल्पना में सामाजिक समानता व न्याय का दृष्टिकोण नीहित था। स्वाभाविक है कि इस गांधीवादी नेतृत्व में चले राष्ट्रीय आंदोलन और इसके अन्तर्गत उठाये गये सामाजिक सुधार के मुद्दों ने 19वीं सदी के धर्म और समाज सुधार आंदोलनों को अर्थहीन बना दिया। अतः भारत में इन सामाजिक धार्मिक सुधारों का प्रभाव आज भी शोध का विषय बना हुआ है।

References

1. Bipin Chandra- Freedom struggle Bishishwan Prasad, Idias in history (Asia Publishing House Bombay)
2. HCE. Zacharia Renas Cent India Charales. H. H. eimath, Indian Nationalism and Hindu Social Reform, Princeton University press, Princeton. 1964, 104-105.